SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

भास के रामायणाश्रित रूपकों में जलसंरक्षण

हिमांशु कुमार, शोधार्थी, स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
हिमांशु कुमार

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 04/12/2023
Revised on : -----
Accepted on : 11/12/2023
Plagiarism : 00% on 04/12/2023

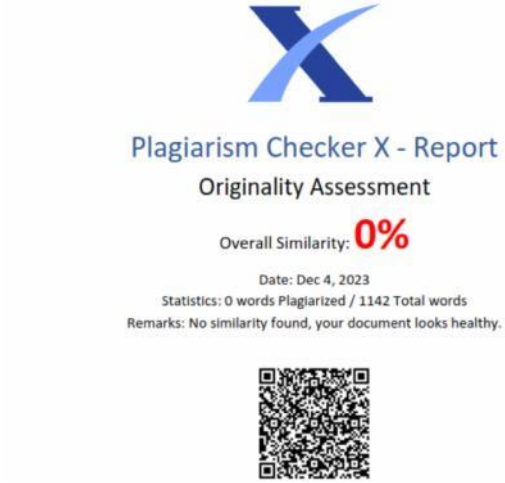

शोध सार

जलसंरक्षण आधुनिक समय की सबसे बड़ी चुनौती है। अधुना जलसंरक्षण हेतु विविध उपाय किए जा रहे हैं। ठीक उसी प्रकार भास कृत रामाश्रित रूपकों के माध्यम से महाकवि ने उस समय जल की स्थिति, आवश्यकता एवं उसके न होने से होने वाले खतरों का उल्लेख किया है। उक्त ग्रन्थों के अध्ययन एवं दर्शन से सहृदयों एवं दर्शकों को जलसंरक्षण के प्रति प्रेरित करने सार्थक प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द

जलसंरक्षण, राम, ग्रंथ, संस्कृत, साहित्य.

प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य के रूपककारों में महाकवि भास अग्रगण्य हैं। संस्कृत कविकुलगुरू महाकवि कालिदास ने मालविकाग्निमित्र के प्रस्तावना में भास की प्रशंसा की है।[1] अधुना भास कृत त्रयोदश रूपक प्राप्त होते हैं, जो मुलरूप में मलयालम भाषा में थे, इसे 1912 ई० में हमारे सामने लाने का श्रेय टी. गणपति शास्त्री को जाता है। इन्होंने आन्तरिक एवं बाह्य साक्ष्यों के आधार पर हमारे समक्ष त्रयोदश रूपक प्रस्तुत किये।

भास कृत त्रयोदश रुपकों में रामायणाश्रित रूपकों की संख्या दो है–1) अभिषेकनाटकम् एवं 2) प्रतिमानाटकम्।

1) **अभिषेकनाटकम्:** महाकवि भास कृत यह रूपक छह अंकों में विभक्त है। इसकी कथा महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण से ली गई है,इसमें किष्किन्धा काण्ड से लेकर युद्धकाण्ड पर्यन्त की घटना का समावेश किया गया है। इसमें राज्याभिषेक की तीन घटनाओं उल्लेख है, प्रथम किष्किन्धा के राजा के रूप में सुग्रीव का राज्याभिषेक, द्वितीय लंका के राजा के रूप में विभीषण का राज्याभिषेक एवं तृतीय अयोध्या के राजा के रूप में श्रीराम का राज्याभिषेक ।

२) **प्रतिमानाटकम्**: महाकवि भास कृत यह रूपक सात अंकों में विभक्त है। इसमें भगवान श्रीराम के वनवास से लेकर रावणवध पर्यन्त चौदह वर्ष की घटना का संक्षिप्त नाटकीय वर्णन है। इसमें भरत को पिता दशरथ की मृत्यु का ज्ञान प्रतिमा को देखने के पश्चात् होता है। इन रूपक की समाप्ति राम के राज्याभिषेक के साथ होती है।

भास कृत रामायणाश्रित रूपकों में पर्यावरण के विविध रूपों की प्राप्ति होती है, यथा– सामाजिक पर्यावरण, भौतिक पर्यावरण, मानव–निर्मित पर्यावरण आदि। मनुष्य के जीवन में जल की प्रधानता मनुष्य की उत्पत्ति से होती है। वेदों में जल संरक्षण हेतु विविध सूक्तों एवं मन्त्रों का संकलन किया गया है।

भास कृत रूपकों में जलसंरक्षण के विविध पहलुओं की प्राप्ति होती है। प्रतिमानाटकम् में जलसंरक्षण एवं उसका राज्याभिषेक हेतु प्रयोग को निर्देशित करते हुए महाकवि भास कहते हैं:

स्कन्धोच्चारणनम्यमानवदनप्रच्योतितोये घटे।[२]

इसी रूपक में समुद्र के सुखने की कल्पना को महाकवि भास ने इस प्रकार कहा है:

शोषं व्रजन्निव महोदधिरप्रमेयः।[३]

नदी के कार्य को बताते हुए कहा गया है, भँवर से युक्त जल वाली नदी के समान पृथिवी धुरी के छिद्र में गिर रही है।[४]

जल की महत्ता की प्रशंसा करते हुए महाकवि भास ने लिखा है:

पिपासार्तोनुधावामि क्षीणतोयां नदीमिव।[५]

उपर्युक्त पंक्ति में भरत अपनी पीडा को स्पष्ट करते हुए कह रहे हैं कि अयोध्या जो पिता दशरथ एवं भ्राता श्रीराम से शुन्य हो चुका है, वहाँ जा रहा हूँ जिस प्रकार प्यासा व्यक्ति सुखे नदी की ओर अग्रसर होता है।

जल की महत्ता का आगे प्रशंसित करते हुए कहते हैं कि माता के हाथों का स्पर्श प्यासे व्यक्ति के लिए जलधारा के समान हुआ करती है।[६]

इसी रूपक में गङ्गा नदी एवं यमुना नदी की तुलना कौशल्या एवं सुमित्रा से की गई है साथ ही इनके गुणों की भूरि–भूरि प्रशंसा की गई है।[७]

वन में जल की स्थिति को वर्णित करते हुए कहा गया है:

भ्रमति सलिलं वृक्षावर्ते सफेनमवस्थितं
तृषितपतिता नैते क्लिष्टं पिबन्ति जलं खगाः।
स्थलमभिपतत्यार्द्राः कीटा विले जलपूरिते।
नववलयिनो वृक्षा मूले जलक्षयरेखया।।[८]

प्रतिमानाटकम् में अतिथि सत्कार हेतु सर्वप्रथम अतिथि के पैर पूजन हेतु जल की उपयोगिता को प्रकट किया गया है।

जलाशय से घडे में जल भरने पर जो ध्वनि उत्पन्न होती है, इस बात का उल्लेख भी प्राप्त होता है।

भगवान् श्रीराम के अभिषेक हेतु मुनियों ने तीर्थों से जल लाया है, जिसका उल्लेख इस प्रकार है:

तीर्थोदकेन मुनिभिः स्वयमाहृतेन नानानदीनदगतेन तव प्रसादात्।[९]

प्रतिमानाटकम् में जलसंरक्षण एवं उसके विविध रूपों को बताने के पश्चात् महाकवि भास ने रामायण आधारित अभिषेकनाटकम् में उल्लेखित जल संरक्षण को विविध रूपों में देखने को प्राप्त होता है:

इस रूपक में जल का रूप मेघ एवं उसके प्रभाव का उल्लेख किया गया है।

जल की विशेषता का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि जिस प्रकार अग्नि का विकराल रूप पृथिवी को दूषित

करता है एवं जल उस विकराल अग्नि को शांत करता है,इसका उल्लेख उक्त ग्रन्थ में प्रस्तुत किया गया है।

अभिषेकनाटकम् के द्वितीय अंक में हनुमान जी जब माता सीता को ढूँढने हेतु लंका में प्रवेश करते हैं और जब वह इधर –उधर माता सीता को ढूँढ रहे होते हैं तो वह वहाँ की स्थिति को देखकर जल का एवं जलाशयों का का वर्णन इस प्रकार करते हैं:

चित्रप्रस्रुतहेमधातुरुचिराःशैलाश्च दृष्टा मया
नानावारिचराण्डजैर्विरचिता दृष्टा मया दीर्घिकाः।[९०]

प्रस्तुत रूपक में लक्ष्मण वरूण की प्रशंसा करते हुए कहते हैं:

सजलजलधरेन्द्रनीलनीरो
विलुलितफेनतरङ्गचारुहारः।
समधिगतनदीसहस्रबाहु–
र्हरिरिव भाति सरित्पतिःशयानः।।[९१]

इसी ग्रन्थ में जब भगवान् श्रीराम अपनी सेना के साथ लंका को कुच करना चाहते हैं तब समुद्र उनको मार्ग प्रदान नहीं करता तब वह समुद्र को धमकी देते हुए जल के नहीं रहने पर हुए प्रदूषण को व्यक्त करते हुए कहते हैं:

हे समुद्र यदि आप मुझे यथाशीघ्र मार्ग नहीं प्रदान करते तो मैं अपने बाणों से दग्ध, जल तथा पङ्क (कीचड़) वाला, जल के सुख जाने पर मरी हुई सैकड़ों मछलियों से व्याप्त–स्थान वाला तथा समाप्त तरङ्ग ध्वनि वाला बना रहा हूँ।[९२]

उक्त वाक्य को सुनकर वरुण भयभीत होकर राम की शरण में आकर क्षमा प्रार्थना करते हैं और उनके द्वारा मार्ग को दे देते हैं।

इसी रूपक में आगे भगवान राम समुद्र की स्थिति का वर्णन करते हुए कहते हैं:

यह समुद्र कहीं–कहीं फेन से व्याकुल, कहीं–कहीं मछलियों से परिपूर्ण जल वाला, कहीं–कहीं शङ्खों से व्याप्त,कहीं–कहीं नीले बादल के समान जल से युक्त, कहीं–कहीं तरङ्ग समूहों वाला, कहीं पक्षों के कारण भयानक, कहीं भयंकर भँवरों से युक्त और कहीं स्थिर शान्त जल से युक्त है।

जल जो समुद्र में व्याप्त है उसकी शोभा की तुलना करते हुए महाकवि भास ने उल्लेखित किया है:

राक्षसों के शरीर रूपी जल से परिपूर्ण, बडे–बड़े वानर रूपी तरङ्गों से युक्त, बड़े–बड़े खड्ग–रूपी ग्राहों वाली तथा राम–रूपी चन्द्रमा के बाण–रूपी किरणों से बढ़े हुए वेग वाली यह युद्धभूमि समुद्र के समान शोभायमान प्रतीत हो रहा है।

इसी प्रकार रावण रूपी बादल से निकली हुई बाण–रूपी जल की धाराएं राम को प्राप्त करके ठीक उसी प्रकार शोभायमान हो रही है जैसे वृषभ को पाकर बादल के जल की धाराएं। ये जल के विविध रूप यथा समुद्र,बादल आदि को प्रशंसित किया गया है।

निष्कर्ष

महाकवि भास कृत रामाश्रित रूपकों में जलसंरक्षण से संबंधित उक्त तथ्यों की प्राप्ति होती है। जल की प्रधानता का उल्लेख महाकवि भास ने उक्त रूपकों में निर्देशित किया है,इससे जल की आवश्यकता एवं उसके प्रभावों उल्लेख प्राप्त होता है।

सन्दर्भ सूची

1. महाकवि कालिदास कृत मालविकाग्निमित्र।
2. श्लोक संख्या–05, प्रथम अंक, प्रतिमानाटकम्।
3. श्लोक संख्या–01, द्वितीय अंक, प्रतिमानाटकम्।
4. श्लोक संख्या–03, तृतीय अंक, प्रतिमानाटकम्।
5. श्लोक संख्या–10, तृतीय अंक, प्रतिमानाटकम्।
6. श्लोक संख्या–12, तृतीय अंक, प्रतिमानाटकम्।
7. श्लोक संख्या–16, तृतीय अंक, प्रतिमानाटकम्।
8. श्लोक संख्या–02, पंचम अंक, प्रतिमानाटकम्।
9. श्लोक संख्या–09, सप्तम अंक, प्रतिमानाटकम्।
10. श्लोक संख्या–06, द्वितीय अंक, अभिषेकनाटकम्।
11. श्लोक संख्या–03, चतुर्थ अंक, अभिषेकनाटकम्।
12. श्लोक संख्या–12, चतुर्थ अंक, अभिषेकनाटकम्।

****